ॐ

सो मूर्ती खंडन निर्णय

[illegible]

[illegible]राथो से बाहिसा जो मुक़ाम देहली सदर बाज़ार

सीतल्ल प्रशा लाला मूल चन्द सेठ में श्रीमति पार्वती

श्रीर[illegible]ी महाराज से पंडित शोचरन साहब का हुवा

[illegible]

जिस्को

लाला कन्हैया लाल साहब साकिन बेद वाड़े

देहली ने छपवाया

तारीख़ १५ जवरी सन १८६७ ई

ज्ञान प्रेस देहली में लाला जैनारायन के प्रबंध से

छापागया

ॐ

हर एक साहब की ख़िदमत में गुज़ा
है कि एक अख़बार जैन हित उपदेशक
से मशहूर है और ख़ास ख़ास जैनी
के मकान पर आता है और जो जैन
कर उनमें ज़रूर ही आता है. उसका अख़ब
नम्बर २८ जिल्द ३ माह नोम्बर सन १८९
को आया था उस्के पढ़ने से साधमार्गी भाइयों के
दिल में एक शक पेदा हुआ था वह ये है. उसमें लिखा
था कि मुक़ाम कपराली में श्रीमती पार्वतीजी महारा
ज से पंडित महचन्द साहब व उमराओ सिंह साह
ब व मन्शी श्रीराम साहब व मुन्शी अमन सिंह सा
हब सोनीपत निवासी और भी पंडित जैन मत वाले

उनके साथ से मुबाहसा हुआ और बहुत से लोग जैन
मतके और वेशनों मतके जमा हुये जिसका मतलब ये
हुआ कि मूर्ती पूजनकी ज़रूरत मालूम हुई बाद में
जो शहर देहली में मुक़ाम पहाड़ी धीरज पर जैनियों
का मंदिर है उसमें एक जैन सभा मुक़र्रिर है जिसका
यह क़ायदा है कि हरएक रविवार को सभा होती है
सो तारीख़ १० दिसम्बर सन् १८९६ ईस्वी दिन रवि
[illegible] को जो सभा हुई तो पंडित मदू चंद साहब वे पंडित
[illegible] राखीसिंह साहब सोनीपत निवासी को हकीम
सीतल प्रशाद ने बज़रये पोस्टकार्ड बुलवाया था
और एक इश्तहार जैन उपदेश हित की तरफ़ से
जारी किया था जिसमें मूर्ती पूजन के बारेमें लकचर
देनेका इक़रार किया था और लिखा था कि जिस कि
सी साहब को कुछ शक होगा तो बाद सभा होने
के उनका शक रफ़े होजायगा- जब यह इश्तहार
जारी हुये तो बहुत से लोग जैनमत और वैशनोंमत
और आरिया और साधमार्गी सभामेंजमा हुये बहो

उनके साथ थे मुबाहसा हुआ और बहुत से लोग जैन मत के और वेशनों मत के जमा हुये जिसका मतलब ये हुआ कि मूर्ती पूजन की ज़रूरत मालूम हुई बाद में जो शहर देहली में मुक़ाम पहाड़ी धीरज पर जैनियों का मंदिर है उसमें एक जैन सभा मुक़र्रिर है जिसका यह क़ायदा है कि हर एक रविवार को सभा होती है सो तारीख़ ३० दिसम्बर सन् १८९६ ईस्वी दिन रवि वार को जो सभा हुई तो पंडित मद्दचंद साहब वे पंडित जुगराओसिंह साहब सोनीपत निवासी को हकीम सीतल प्रशाद ने बज़रये पोस्टकार्ड बुलवाया था और एक इश्तहार जैन उपदेश हित की तरफ़ से जारी किया था जिसमें मूर्ती पूजन के बारे में लकचर देने का इक़रार किया था और लिखा था कि जिस किसी साहब को कुछ शक होगा तो बाद सभा होने के उनका शक रफ़े होजायगा जब यह इश्तहार जारी हुये तो बहुत से लोग जैन मत और वैशनों मत और आरिया और साधमार्गी सभा में जमा हुये वहां

पंडित महचन्द व पंडित उमराओ सिंह ने मूर्ती पूजन और विद्या पर लकचर दिये मगर जिस वक़्त उन्होंने देखा कि इस सभा में कुछ साधमार्गी भाई भी मोजूद हैं तो फिर बहुत ज़ोर देकर फिर सभा को समझाया बल्के साध मार्गियों की बाबत भी कुछ ज़ोर दिया बाद में यह अलफ़ाज़ भी अपनी ज़ुबान से कहे थे कि देखो चार फ़िर्क़े मूर्ती को नहीं मानते हैं॰ इसाई॰ मुसल्मान॰ आरया॰ और साध मार्गी और बल्के हम भी नहीं मानते हैं लेकिन हम तो इस वास्ते मानते हैं कि सिर्फ़ मूर्ती के देखने से तीर्थंकरों का स्वरूप याद होता है इस वास्ते मानते हैं॰ अब अक़लमंदों को ख़्याल करना चाहिये कि अपनी ज़बान से तो खंडन करना और अपनी ज़ुबान से ही मंडन करना यह बात कभी नहीं हो सक्ती मगर इसमें ये पाया जाता है कि वह लोग भी अपने दिल में समझते हैं कि मूर्ती का पूजना दुरुस्त नहीं

है और कुछ धर्म भी नहीं होता है लेकिन अपने पक्ष मज़बूत करने के वास्ते इसको क़ायम किया कि शायद हमारे पक्ष से कोई टूट न जाय बाद में लाला जमनादास साहब सिकरेटरी आरिया समाज देहली सदर बाज़ार ने पंडित महचन्द साहब से चन्द सवाल किये और एक यह सवाल भी किया कि मूर्ती में गुण बड़े होते हैं या पूजने वाले में क्योंकि बंधना और नमस्कार गुणों को कीजाती है· जिसका जवाब पंडित महचन्द जी ने माक़ूल नहीं दिया और उसको टालने लगे· लेकिन उस वक़्त पंडित महचन्द साहब को उसके सवाल का जवाब ज़रूर देना ही लाज़िम था क्योंकि उन्होंने इश्तहार में लिख दिया था कि जिस किसी आदमी के दिल में कुछ शक होगा तो उसका शक रफ़े कर दिया जायगा· लेकिन पंडित साहब से उसका शक रफ़े न हो सका· बाद में

साधमार्गी साहिबों को वह ख़्याल आया जोकि
पुरु में आप साहिबों की ख़िदमत में बाबत
मुबाहसे छपरोली के गुज़ारिश किया है और
कुछ उस वक़्त का भी ख़्याल हुआ· तब पंडित
महचन्द साहब व पंडित उमराओ सिंह सा
हब बल्के तमाम सभासे मुख़ातिब होकर
कहा पहले जो अख़बार जैन उपदेशक आया
था जिसमें लिखा है कि पंडित महचन्द साह
ब से श्री मती पार्बतीजी महाराज की बहस
में मूर्ती पूजन की ज़रूरत मालूम हुई· सो
हमने श्री मती पार्बतीजी महाराज से दरयाफ़्त
किया था तो उन्होंने फ़रमाया कि हमारा बारता
उनसे हुई थी और जो सवाल पंडितजी ने हम
से किया उसका जवाब हमने उनको देदिया·
लेकिन हमने एक सवाल पंडितजी से किया
था जिसका जवाब पंडितजी ने कुछ भी न दिया
बल्के एक दूसरे पंडित उनकी एवज़ बोले तब

श्रीमती पार्बतीजी महाराजने उस पंडित के सवाल का भी जवाब देदिया और अपना एक सवाल उस पंडित से भी किया उसने भी कुछ जवाब न दिया बल्के वहांसे उठकर चले आये अब इसवक़ पंडित महचंद साहब भी मोजूद हैं और श्री मति पार्बतीजी महाराज भी बिराजमान हैं मूर्ती पूजन का निर्णय होजाना चाहिये. उसवक़ जो साहब कि सभा में मोजूद थे उन्होंने और पंडित महचंद साहब और पंडित उमराओ सिंह साहब ने इसबात को बहुत ख़ुशीसे मंज़ूर करलिया जिसके लिये तारीख़ २१ दिसम्बर सन १८९६ ई॰ स्थीब मकान धर्म शाला लाला मूलचंद साहब में बवक़ १२ बजे से ४ तक सभा के वास्ते मुक़र्रिर हुआ चुनान्चे २१ दिसम्बर को वक़ मुक़र्रिर पर सब साधमार्गी भाई मोजूद थे और एक बजे तक पंडित महचंद साहब और पंडित उमराओसिंह साहब का इन्तज़ार करते रहे. इससे मालूम होता है

कि जब इनसे कोई सूरत न बनी तो पंडित शो
रन साहब जो शहर देहली के रहने वाले हैं उन
के पास गये और बाद एक बजे के उनको साथ
लेकर तशरीफ़ लाये · ज़रा धर्मशाला का हाल
सुनिये · अभी तक सभामें शास्त्रार्थ शुरू नहीं
हुआ था उससे पहले यह कहा गया था कि एक
एक साहब दोनों फ़रीक़ मेंसे बोलें इस तरफ़से
तो श्रीमती पार्बतीजी महाराज और आपकी तर
फ़ से जिसको आप लायक़ समझें वह बोलें तब
पंडित महचन्द साहब और पंडित अमराओसिंह
साहब सोनीपत वाले जिन्होंने २० दिसम्बर को
वायदा किया था वह तो चुप याने ख़ामोश हो
कर बैठ गये · और पंडित शोचरन साहब देहली
वाले जिनको साथ लाये थे गुफ़्तगू करने लगे ·
अब सवाल व जवाब हर्फ़ ब हर्फ़ मुबाहसे के और
एतराज़ात हर एक किताब मूर्तीमंडन जो लाला
जनेश्वरदास साहब ने छापी है ये हैं जो लिखते हैं ॥

सवालात पंडित शीाचरनसाहब	जवाबात
सवाल १॥ यहसभाका प्रीश्रम क्यों उठायाहै॥	जवाब॥ लाला फ़कीर चंद साहबने उनको ज वाब दियाकि अख़बार जैन हित उपदेशक आया. था उसमें लिखाया कि श्रीमति पार्बतीजी महारा ज और पंडित मह्लचन्द साहबके बहस में मूर्ती पूजनकी ज़रूरत मालूम हुई उसका निर्णय हो जाना चाहिये॥
सवाल २॥ शास्त्रार्थ मूलपाट से हो॥	जवाब॥ अर्जकाजी ने फ़र्माया मंज़ूर है टी के टबबे से कुछ काम नहीं॥

सवाल ३॥ मदहस्त की ज़रूरत होगी मदहस्त करना चाहिये	जवाब। ।कन्हैया लाल ने कहा मदहस्त मिलना दुश्वार है कि लिये कि फ़िर्कें दो हैं एक मूर्ती खंडन वाले और एक मूर्ती मंडन वाले मदहस्त किसको करें।
सवाल ४। मुझे मंज़ूर है तुम्हारे माने हुये शास्त्रों ही से मूर्ती पूजन का हुक्म श्री महावीरजी का फ़र्माना बतला देंगे अब यह बतलाइये कि आप कोनसे शास्त्र को मानते हो॥	जवाब॥ श्री मती पार्वतीजी ने फ़र्माया हम द्वादश अंग बानी भगवंतों के बचन को मानते हैं इस मेंसे मूर्ती पूजन और मंदिर बनवाने का हुक्म निकाला जावे॥
सवाल ५॥ द्वादशांग बानी के नाम बतलाइये	जवाब॥ श्रीमती पार्वतीजी ने फ़र्माया कि आप

और इन सूत्रों में श्री महा बीरजीसे किसी राजा या सरावग ने मूर्ती पूजन और मंदिर बनवाने का प्रश्न किया है या नहीं॥	द्वादश अंग बानी के सू त्रों के नामही नहींजान ते हैं तो उनमेंसे प्रश्न बतलाकर क्योंकर सिद्ध करेंगे और द्वादश अंग बानी में मूर्ती पूजन और मंदिर बनवाने का प्रश्न किसीने नहीं किया
सवाल ६। बेशक में नहींजानता हूं आपही मुजको कृपा करके बत ला दीजिये॥	जवाब। श्री सती पार्ब तीजी ने नाम शास्त्रोंके बतलाये॥ १ आचार अंग २ सूची कृतांग॥ ३ थानांग ४ समुरांग। ५ भगवती॥ ६ ज्ञाताधर्मकथा। ७ उपाशक दिशा· ८ अंतगढ दिशा॥ ९ अनूत्तर बिवाई। १० प्रश्नव्याक र्ण। ११ बिपाक। १२ दृष्टीबाद॥

यह बारह अंगके नाम हैं	
सवाल ७॥ औरजोसूत्र इनसेजुदेहैं वह इन शास्त्रोंके अनुसार हैं या नहीं ॥	जवाब॥ श्रीमतिपार्व जी नेकहा कितने एक सूत्र अनुसार हैं॥
सवाल ८॥ ओशाक सूत्रइनके अंतरगत है या नहिं ॥	जवाब॥ हाँ ओशाक इनके अंतरगत है॥
सवाल ९॥ साराधदिनकर इनके अंदर है या नहिं ॥	जवाब॥ सराधदिनकर इनके अंदर नहिंहै
सवाल १०॥ उबाई औरउबाईसूत्र अंतरगत है या नहिं ॥	जवाब॥ उबाईसूत्र तो है और उबाई नहिं
सवाल ११॥ अब इन ओशाक और उबाई में मंदिरके बनवान का	जवाब॥ मंदिरके बनवाने औरमूर्तीके पूजने कासवाल ओशाक और

और मूर्तीके पूजनेका सवाल किसी स्रावग या राजा ने कियाहै या नहिं ॥	उबाईके मूलपाठमें भ गवंतों के बचन हैं कि सी ने नहिं किया ॥
सवाल १२॥ ओशक और उबाई दोनों शास्त्रों को मंगाया जावे ॥	जवाब॥ ओशक और उबाई दोनों शास्त्र मोजूद हैं इसमें देखकर बतला दीजिये ॥
सवाल १३॥ शायद आपके इन सूत्रोंमें वह गाथ निकाल दियेहोंगे	जवाब॥ शायद आपके इन सूत्रोंमें वह गाथा ज़ियादह लिख दिये होंगे
सवाल १४॥ अच्छा हमारे तुम्हारे सूत्रों से अलावह जो थानक जैन मत बारहदरीके भंडारे में मून हैं उनमेंसे मंगाये जावें फिर मदहत्त करलेंगे	जवाब॥ शास्त्र भंडार से मंगाने मंज़ूरकरे और कहा कि तुमको भंडार के शास्त्र मंज़ूर हैं तो फिर मदहस्तकी क्या ज़रूरत है ॥

सवाल १५॥ मुझे मंज़ूर हैं उन्ही शास्त्रों से तसफ़िया होजायगा॥	
सवाल १६॥ अच्छा कोई साहब भंडारसे उबाई शास्त्र ले आवें चुनाचे कन्हया लाल और प्यारेलाल शास्त्र लेनेगये और शास्त्र ले आये	
सवाल १७॥ ओशक भी लाये हो	जवाब॥ आपने उस वक़्त दो शास्त्रोंके वास्ते नहीं कहाया॥
सवाल १८॥ अच्छा अब जो वक़्त सभाका क़ायम हुआ था वह पूरा होगया अब कोई और	

तारीख़ मुक़र्रिर करनी चाहिये चुनांचे तारीख़ २३ दिसम्बर वास्ते सभा होने के क़रार पाया और सभा ख़तम होगई. फिर तारीख़ २३ दिसम्बर सन् १८८६ ईस्वी को सब जैनी भाई और वैश्य और आरिया बहुत से आदमी तख़मीनन दो हज़ार के जमा हुये ॥	कन्हैयालाल ने कहा कि आज सभा तीन बजे तक होगी और ओशाक और उवाई दोनों शास्त्र मोजूद हैं आप इनमें से मूर्ती पूजने और मंदिर बनवाने का सबूत हुक्म महाबीरजी का दिखला दीजिये ॥
सवाल १९ ॥ जो उवाई शास्त्र पंडित साहब अपने साथ लाये थे उस में से एक जगह बतलाके	जवाब ॥ श्रीमती पार्वती जी महाराज ने यह पाट सुना दिया जिसके अंदर यह गाथा भी मोजूद हैं

कहा· इसजगहसे पाठ
पढ़ाजावे जहाँ चमपा
नगरीका वर्णन है ॥

गाथा॥ कुकुड संडे
य गाम पउरा ॥ अर्थ
कुकुड़ोंके पालने वाले च
मपा नगरीमें घने रहते
हैं· और किताब मूर्ती
मंडनमें जो लिखाहै कि
श्रीमति पार्बतीजी महारा
ज ने यह अर्थ कियेथे
कि उस नगरीमें चोर और
गठकटे रहतेहैं यह बि
ल्कुल ग़लत है इससे
साबित होताहै कि शायद
वह अर्थ समझेही नहिं
क्योंकि श्रीमति पार्बती
जी महाराजने तो कुछ औ
र फ़र्माया था और उसमें
कुछ और लिखेहैं अब हम

गाथा अर्थ सब खुलासा लिखते हैं. जैसे कि श्रीमति पार्बत्ती जी महाराज ने फ़र्माये थे ज़रा ग़ौर करके पढ़िये ॥

गाथा

गंठीभयय भड़तक्कर
खंड रक्करहिया ॥

अर्थ ॥ वह नगरी चोर और गठकतरों से रहित है याने वहां चोर और गठकतरे नहीं रहते ॥

सवाल २० ॥ गाथा और अर्थ जो पंडित श्रीचरन साहब ने फ़र्माए थे वह यह हैं ॥ गाथा कुक्कट सम्पात ग्राम ॥

अर्थ ।। मुरग़ा एक बस्ती से उड़कर दूसरी बस्ती में जासके नगरी की ख़ूबसूरती और बसतियों के निहायत क़रीब होने का ज़िक्र है जो अक्सर हिन्दी में कवी लोग शहरों और नगरों की तारीफ़ में काम में लाते हैं भला मुरग़ों के पालने वालों को शहर की ख़ूबसूरती से क्या मतलब· अव्वल तो आपकी प्राकृत ही ग़लत है और जो मानी याने अर्थ कहे हैं वह भी बिल्कुल ग़लत कहे हैं ख़्याल करने की

बात है कि मुरग़ा भी एक बस्ती से उड़कर दूसरी बस्ती में जा सक्ता है · इस बात को कोई भी अक़लमंद दुरुस्त नहिं समझ सक्ता इससे साफ़ ज़ाहर है कि पंडित साहब प्राकृत से पूरी वाक़फ़ियत नहीं रखते बल्के प्राकृत और अर्थ इसतरह पर हैं जो श्रीमती पार्बतीजी महाराज ने फ़रमाये थे ॥	
सवाल २१ ॥ फिर पंडित साहब ने जो गाथा कही वह ये हैं ॥ करमेलक ॥ अर्थ ॥ ऊंट ॥	वह अर्थ और गाथा ये हैं जो श्रीमती पार्बतीजी महाराज ने फ़र्माई थी। गवेलक। अर्थ। गवे

अव्वल तो यह गाथाही	मानी · गाय · एक
प्राकृति ग़लत कही और	मानी · बकरे ॥
अर्थ भी ग़लत कहे ·	
फिर बादमें जो गाथा कि	
पाट में आई थी उनके	
अर्थ कहे वहभी ग़लत	
कहे हैं क्योंकि आपने	
कहा कि वह नगरी भग	
वान मंदिर और चैतयालों	
से रमनीक है · यानेउस	
में भगवान मंदिर बहुत	
हैं यह आपका कहना	
बिल्कुल ग़लत है उबाई	
सूत्र में यह बात नंही	
है · जब यहां तक उबाई	
सूत्र के पाट में पंडित	
साहब ने अपने सवाल	

की कुछ सम्मती न पाई तो फ़रमाया ॥	
सवाल २२॥ इन प्राकृती गाथाओं के अर्थ संस्कृत में बतला दीजिये	जवाब ॥ श्रीमती पार्बतीजी महाराज ने फ़र्माया कि जब प्राकृत संबंध है तो अर्थ प्राकृत व्याकरण से देखने चाहिये प्राकृत को संस्कृत में लाना यहां क्या अर्थ रखता है ॥
सवाल २३॥ तो श्रीमतीपार्बतीजी महाराज से कहने लगे कि अंबड़ सरावग का जहां बरणन है उस जगह से कृपा करके सुना दीजिये	जवाब ॥ तब श्रीमती पार्बतीजी महाराज ने उस पाठ को भी सुना दिया ॥
सवाल २४॥ जब	जवाब ॥ श्रीमती पार्बती

पंडित साहब ने अंबड़ सरावग के पाट कोभी ख़ूबी सुनलिया और अपने साथ जो उबाई सूत्र लाये थे उसमें भी उसी मुताबिक़ पाया जैसा कि श्रीमती पार्वती जी महाराज ने फ़र्माया था लेकिन पंडित साहब ने जो सवाल किया था कि महाबीरजी ने किसीको मूर्ती पूजने या मंदिर बनवानेका हुक्म दिया है या नहीं इसका तो सबूत न देसके मगर अंबड़ सरावग के पाट में जो चेइये शब्द आया

जी महाराज ने पाट से ख़ुलासा करके चेइये शब्द का अर्थ साधू के संबंध से पंडित साहब को समझा दिया बल्के चेइये शब्द के अ[र्थ] बहुत से बतलाये थे जो पंडित साहब ने मंज़ूर करलिये ॥

सपर बहस करनेलगे	
सवाल २५॥ फिर कहने लगे कि इसका अर्थ कोश में देखना चाहिये ॥	जवाब ॥ श्रीमतीपार्व तीजी महाराज ने फ़र्मा या कि जब इस शब्द के अर्थ बहुत हैं जो आपने मंज़ूर कर लिये हैं फिर कोश की कुछ ज़रूरत नहीं अब संबन्ध देख ना चाहिये जिस जगह पर जैसा संबन्ध हो वै सा अर्थ लगाना चाहिये आपके पासभी शास्त्र मोजूद है देखकर सिद्ध कर लीजिये आपभीतो प्राकृत जानते होंगे ॥
सवाल २६॥ पंडित साहब ने कहा कि हाँ	जवाब ॥ श्रीमति पार्व तीजीमहाराजनेफ़र्माया

में नहीं जानता इस में
मदहस्त कर लीजिये ॥

कि हमतो रमते
हैं हम मदहस्त
श कहां कर सक्ते
वक़्त दोनों फ़रीक़
बग मोजूद हैं इन्हें
तियार है ॥ तब
लाल जोहरी साध
ने कहा कि पंडित स
आपने जो दावा प
कियाथा कि तुम्हारे
सूत्रों में से मूर्ती पूज
और मंदिर बनवाने
सबूत दिखला देंगे
सिद्ध नहीं किया फिर
दहस्त की कोनसी बात
के लिये ज़रूरत है आप
ने अपने दावे को तो सबू

	किया नहीं सिर्फ़ एक चेइये शब्द पर मद हस्त करने को तैयार हो· इस शब्द के ब हुत से अर्थ श्रीमती पार्वतीजी महाराज ने आप को बतलाये और आपने मंज़ूर करलिये· अब तो सिर्फ़ संबन्ध देखना चाहिये इसमें मदह स्त की क्या ज़रुरत है इस बात का जवाब पंडित शोचरन साह ब ने कुछ न दिया·
	और मुन्शी श्रीराम साहब से लकचर

दिलवाने मुस्तकिये ताके वक्त सभाका पूरा होजावे. और इन्हीं लाहासिल बातों में वक्त खतम होगया ॥

लाला जनेश्वर दास साहब ने किताब मूर्ती मंडन निरणय जो छापी है और आपने लिखा है कि पंडित उमराओसिंह साहब ने चन्द माकूल सवालात किये जिनसे पंडित साहब का बुद्धमान होना बखूबी ज़ाहिर होताथा. अब ज़रा ख्याल कीजिये कि पंडित साहब तो बिल्कुल खामोश याने चुप बैठे थे उनमें सवालात करने का उसवक़्त होसला कहांथा अगर उनको होसला होता तो पंडित शोचरन

साहबको क्यों बुलाकर लाते. अगर कोई सवाल कियाथा तो वह किताब मर्तीमंडन में क्योंनहीं लिखा और पंडित शोचरन साहब नेजो सवाल श्रीमति पार्वतीजी महाराज से कियेथे और श्रीमति पार्वती जी महाराज ने जोजवाब दियेथे वह नहीं लिखे और जो लिखेहैं वह बिल्कुल ग़लत लिखे. उनको वाजिबथा कि कुल मुबाहसा किताब मूर्ती मंडन में लिखते कि जिससे पढ़ने वालों को पूरा मतलब हासिल होजा ता और यह इबारत जो लिखीहै कि श्रीमति पार्वतीजी महाराज को प्राकृत का बोद्ध नहीं है अर्थ सही नहीं करसक्ती सिर्फ़ टीके टबें से काम निकालती हैं. और आपही लिखते हैं कि उबाई सूत्र निकाला गया और एक परत पंडित शोचरन साहब ने और दूसरी श्री मतिपार्बतीजी महाराज ने लेकर बाहम

मुक़ाबला किया मुताबिक़ पाया · पस अग
उनको प्राकृत का बोद्ध न होता तो शास्त्र का
पाट और अर्थ किसतरह सुनादेती ॥ लेकि
पंडित साहिब को प्राकृत का बोद्ध नहीं था स
गर उनको प्राकृत का बोद्ध होता तो अर्थसा
सही करके अपने दावे को सिद्ध करते । सिर्फ़
मद हस्त के ऊपर बात को टाल कर अपना पी
छा छुटा कर न जाते ॥ और आपने यहभी लि
खा है कि ओशाक सूत्र को फ़िरके थानक पंथी
ने पेश नहिं किया · बड़े अफ़सोस की बात है
कि पंडित शोचरनजी ने जो उबाई सूत्र अपने
साथ लाये थे उसको निकाल कर श्रीमति पार्वती
जी महाराज से बारता करने लगे और ओशाक
सूत्र का कुछभी ज़िक्र नहिं किया अगर कुछभी
ज़िक्र करते तो हम पहलेही कह चुके थे कि दोनों
सूत्र जो आपने मंगाये थे मौजूद हैं यह तहरीर
फ़र्माना कि ओशाकसूत्र पेश नहीं किया बिल्कुल

ग़लत है. इससे ज़ाहिर होताहै कि पंडित साह
ब अपने साथ श्रोप्राक सूत्र भी लायेथे मगर
सभामें इस सबब से कुछ ज़िक्र नहीं किया कि
उन्होंने समझा होगा कि श्रोप्राक सूत्र के मूल
पाट में किसीको मंदिर बनवाने और मूर्तीपूज
नेका हुक्म श्री महाबीरजी ने नहीं दिया है.
इसवास्ते पंडित साहबने श्रोप्राक को नहीं नि
काला. और यह जो लिखाहै कि भगोती वग़ैरा
शास्त्रों में जैन मंदिर और मूर्ती पूजने का हुक्म
श्री महाबीरजी का है यह लिखना बिल्कुल
ग़लत है ॥

अब सब साहिब ख़्याल फ़रमावें कि अव्वल
तो मुबाहसा पंडित महचन्द साहब और पंडित
उमराओसिंह साहब से क़रार पायाथा वह दोनें
साहब तो ख़ामोश बैठेरहे इससे साफ़ ज़ाहिर
होताहै कि दोनों साहब शास्त्रों से नावाक़िफ़ थे
अगर वाक़िफ़ होते तो श्रीमति पार्बतीजीमहाराज

से जवाब सवाल करते. जब उनको मुबाहसे का होंसला यहां पर न हुआ तो इससे साबित होगया कि मुक़ाम छपरोलीमें श्रीमाति पार्बती जी से मुक़ाबला करनेमें आजिज़ होगयेथे. तो पंडित शोचरन साहबको बुलाकर लायेथे.

अब यह ग़ौर फ़र्माइये कि पंडित शोचरन साहिबने अपने सवाल की कौनसी सबूती दी याने उनका सवाल यहथा कि हम तुम्हारे सूत्रोंसे महाबीरजी का हुक्म मूर्ती पूजन और मंदिर बनवानेका साबित करदेंगे वह तो न किया और एक चेइये शब्द पर हुज्जत करने लगे.

अब ख्याल फ़र्मावेंकि चेइये शब्द से और उस सवालसे क्या निस्बत. यक़ीन करता हूं कि इसको पढकर सब साहिबों को मालूम होजावेगा कि शास्त्रों में किसी जगहभी मंदिर बनवाने और मूर्ती पूजनेका हुक्म नहिंहै और पंडित साहिबने अपने दावे को सबूत करके

न दिखलाया और यहभी यक़ीन है कि मूर्ती पूजने वालेभी अपने दिलमें इस बात को बख़ूबी जानते हैं कि मूर्ती पूजनेमें सरासर जीव की हिंसा है और भगवंतों के येही बचन हैं कि किसी जीव को मत हनों जिसका सबूत उनके साइन बोर्ड की तहरीर भीहै जो मेले रथजात्रा में सवारी के आगे रखते हैं जिस में लिखतेहैं (अहिंसा परमो धरमे यतो धर्मस ततो जय) लेकिन पक्ष के सबब से ज़ाहर में इक़बाल नहीं करते ॥

अब आप सब साहिब ख़्याल फ़रमावें कि पहले जो छपरोली की बाबत अख़बार में छपवाया था वह भी ग़लत था और किताब मूर्ती मंडन भी बिल्कुल ग़लत है. और शास्त्रों में किसी जगह मंदिर बनवाने और मूर्ती पूजने का हुक्म नहीं है ॥

॥ समाप्तम् ॥